सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

अवसर

5

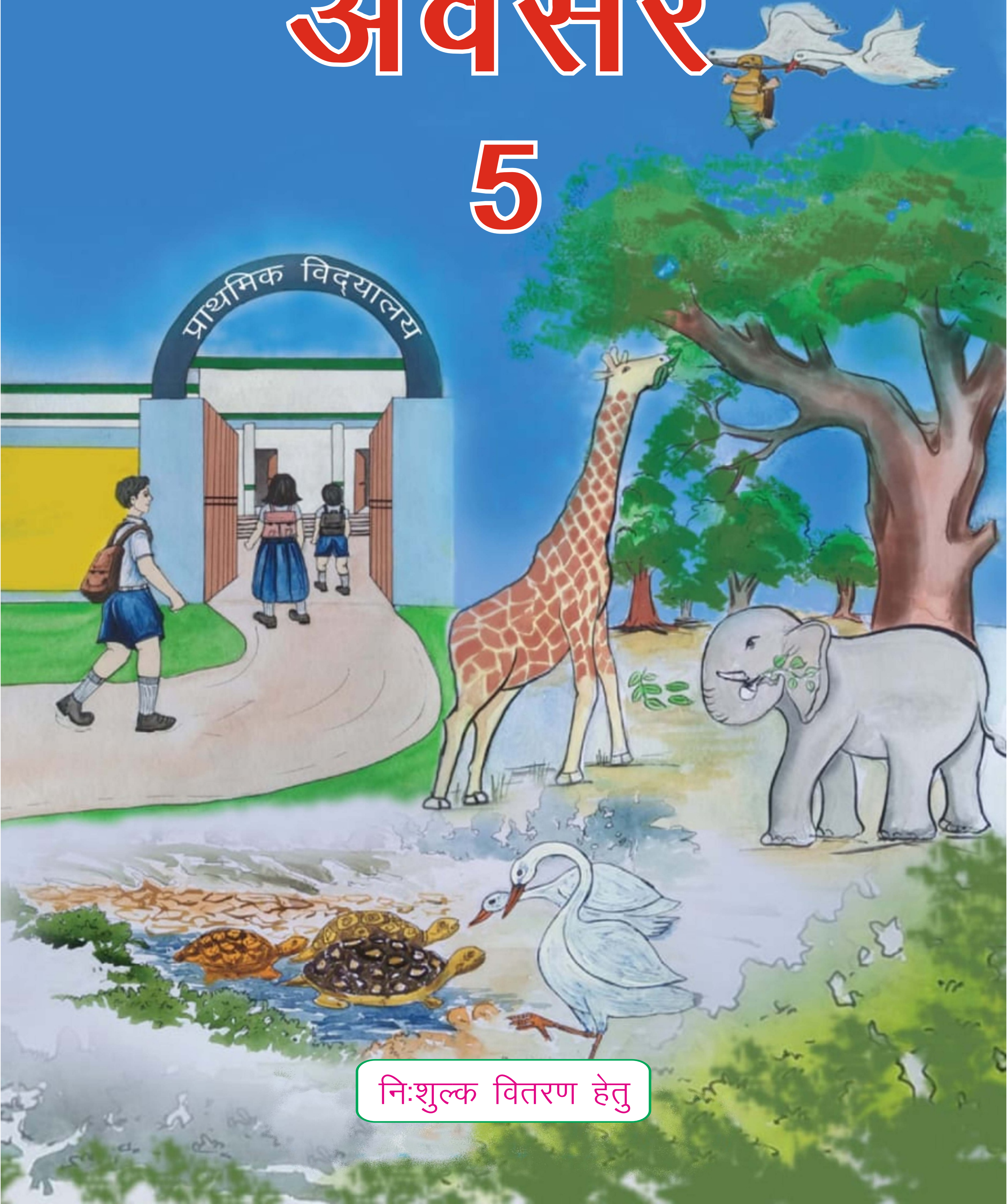

निःशुल्क वितरण हेतु

शिक्षकों से बातचीत

शिक्षा प्राप्त करना सभी का संवैधानिक अधिकार है। यह अपेक्षा रहती है कि सभी बच्चे औपचारिक रूप से शिक्षित होने के लिए विद्यालय में नामांकित हों और शिक्षा ग्रहण करें। भिन्न विशेषता वाले बच्चों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भौतिक संसाधन, पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधियों में अपेक्षित बदलाव करते हुए समावेशी वातावरण व क्रिया-कलाप को भी अपनाया जा रहा है। बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के भाषायी दक्षता विकास के लिए हम सभी को उनकी क्षमता के अनुरूप पाठ्यक्रम व शिक्षण के तरीको को अपनाने की आवश्यकता है, जिससे वे सहज और सरल तरीके से भाषा विकास से जुड़ी गतिविधियों में प्रतिभाग कर सकें। चिंतन, चुनौती एवं रुचि को ध्यान में रखकर किये गये प्रयास सार्थक परिणाम देंगे।

बच्चों के साथ शिक्षण कार्य करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है-

१ एक साथ कई जानकारियों को प्रदर्शित न किया जाय।

२ आरम्भिक बातचीत के दौरान उनकी क्षमता व विशेषता का आकलन/मूल्यांकन को संदर्भ में लिया जाय।

३ विषयवस्तु को समझाने के लिए यथासम्भव मूर्त वस्तुओं का उपयोग किया जाय।

४ अधिगम सम्प्राप्ति का मूल्यांकन सतत् रूप से करते हुए विषयवस्तु/शिक्षण बिंदु को विस्तार दिया जाय। शिक्षण अधिगत सामग्री का प्रयोग करते समय यह ध्यान रखा जाय कि चित्रों का आकार बड़ा व स्पष्ट हो। कई रंगों का प्रयोग एक साथ न हो।

५ छोटी-छोटी कविता एवं कहानियों को सुनाया जाय। अधिक से अधिक २ या ३ पात्रों वाली कहानी जो किसी समस्या का समाधान कर रही हो या कोई संदेश दे रही हो, को सुनाया जा सकता है।

६ पठन हेतु निर्धारित वर्ण एवं शब्द को बोल्ड फॉन्ट में प्रयोग किया जाय।

७ बच्चों के सभी प्रयासों पर पुनर्बलन अवश्य दिया जाय।

८ भावात्मक रूप से जुड़ाव इन बच्चों के अधिगम सम्प्राप्ति को बढ़ाने में मदद करता है।

९ प्रत्येक बच्चे की प्रगति/उपलब्धि का आकलन उसके उपलब्धि के सापेक्ष किया जाय।

१० पाठ्य वस्तु को छोटे-छोटे भागों/चरणों में विभक्त कर शिक्षण कार्य किया जाय।

११ भाषायी दक्षता विकास हेतु दृश्य-श्रव्य सामग्री का भी प्रयोग किया जा सकता है।

बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के साथ कार्य करते समय धैर्य एवं विभिन्न तकनीकों के प्रयोग की आवश्यकता होती है।

आप से यह अपेक्षा है कि आप बच्चों के साथ शिक्षण कार्य करते हुए उपर्युक्त बातों को भी ध्यान में रखते हुए सफलतापूर्वक लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद्

अवसर– 5

नाम : ----------------------------

माता का नाम : ----------------------------

पिता का नाम : ----------------------------

विद्यालय का नामः ----------------------------

पता : ----------------------------

निःशुल्क वितरण हेतु

मुख्य संरक्षक	:	श्रीमती रेणुका कुमार, अपर मुख्य सचिव, बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश।
संरक्षक	:	श्री विजय किरन आनन्द, महानिदेशक (स्कूल शिक्षा) उ0प्र0 तथा राज्य परियोजना निदेशक, उ0प्र0 सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद्, लखनऊ।
निर्देशन	:	डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, उ0प्र0, लखनऊ।
समन्वयन	:	श्रीमती ऋचा जोशी, राज्य हिन्दी संस्थान, उ0प्र0, वाराणसी।
विशेष समन्वयन	:	श्रीमती चन्दना रामइकबाल यादव, निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ0प्र0, वाराणसी।
समीक्षा	:	श्री अजय कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक एस0सी0ई0आर0टी0, उ0प्र0, लखनऊ, श्रीमती दीपा तिवारी, सहायक निदेशक, एस0सी0ई0आर0टी0, उ0प्र0, लखनऊ,।
परामर्श	:	प्रो0 वशिष्ठ अनूप (हिंदी विभाग) काशी हिन्दू वि0वि0, वाराणसी, डॉ0 आर0 ए0 जोसेफ, निदेशक, विकलांग समाकलन संस्थान, करौंदी वाराणसी, डॉ0 आशीष कुमार गुप्ता, एसो0 प्रो0, काशी हिन्दू वि0वि0 वाराणसी, डॉ0 उदयन मिश्रा, एसो0 प्रो0, मनोविज्ञान विभाग हरिश्चन्द्र पी0जी0 कॉलेज, वाराणसी, डॉ0 विनीता, असि0 प्रो0, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू वि0वि0, वाराणसी।
संपादन	:	श्रीमती नीलम यादव, डॉ0 अमरजीत, शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ0प्र0, वाराणसी।
लेखन	:	श्रीमती रेखा वर्मा, श्रीमती नमिता सिंह, श्रीमती रत्नेश कुमारी पाण्डेय, श्री अखिलेश्वर प्रसाद गुप्ता, डॉ0 कुँवर भगत सिंह, श्रीमती अर्चना सिंह, श्रीमती अनीता शुक्ला, श्रीमती सुमन पाण्डेय, स0 अ0 बेसिक, श्री श्यामलाल पटेल, श्री पवन कुमार, श्री रवि प्रकाश सत्ये, श्री उदय प्रताप सिंह, श्रीमती निधि विश्वास, श्रीमती अंजना श्रीवास्तव, डॉ0 नीला विशालक्ष्मी बापट्ला, बौद्धिक दिव्यांगता से संबंधित विशेषज्ञ श्रीमती उषा कुशवाहा, श्रीमती पुष्पा देवी, श्रीमती नीलू सिंह, श्रीमती आभा देवी, इन्टीरेण्ट टीचर बेसिक ।
चित्रांकन	:	श्री संजय यादव, श्री अखिलेश कुमार गौतम, डॉ0 ज्ञानेश्वर नाथ शर्मा, सरिता पटेल, श्रीमती प्रज्ञा श्रीवास्तव, श्री सुनील कुमार, श्री ज्ञान प्रकाश कुशवाहा, शालिनी सिंह, कु0 कुसुम, श्री ईश्वर दयाल, श्री आनंद, श्री सुभाष चन्द्र, श्री अजीत कुमार।
कम्प्यूटर ले–आउट	:	श्री मनोज कुमार यादव, श्री अजीत कुमार कौशल, श्री विनय कुमार।
आभार	:	पाठ्यपुस्तक के विकास में विभिन्न संस्थाओं की पाठ्य–सामग्री/साहित्य का उपयोग किया गया है। हम उन सभी के प्रति आभारी हैं।

मुद्रक एवं प्रकाशक :

संस्करण :

शिक्षा सत्र : 2020–2021

उत्पादन : पाठ्य पुस्तक विभाग, शिक्षा निदेशालय (बेसिक), उ0प्र0।
© उत्तर प्रदेश शासन।

प्राक्कथन

निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 सभी बच्चों को पढ़ने–लिखने का अवसर प्रदान करता है। पाठ्यपुस्तकें सीखने–सिखाने का सबसे सशक्त एवं महत्त्वपूर्ण साधन हैं। बौद्धिक रूप से दिव्यांग बच्चों के दैनिक व सामाजिक व्यवहार सामान्य बच्चों से अलग होते हैं। उनके सीखने की क्षमता अन्य बच्चों से धीमी व अलग होती है। ऐसी स्थिति में बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 तथा दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम–2016 के सिद्धान्तों के दृष्टिगत इन बच्चों को विद्यालयी शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु पाठ्यपुस्तक का विकास किया गया है। यह पुस्तक बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के साथ–साथ उनके अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए भी उपयोगी है।

बौद्धिक रूप से दिव्यांग बच्चों में सीखने की गति, संवेगात्मक विकास, बौद्धिक कार्य व व्यवहार में अनुकूलन की क्षमता कम होती है। सभी बौद्धिक दिव्यांग बच्चे एक जैसे नहीं होते हैं तथा अधिगम अक्षमता में प्रशिक्षण के द्वारा सुधार लाया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षण एवं प्रशिक्षण हेतु योग्य बौद्धिक दिव्यांग बच्चों को सिखाने में माता–पिता, अभिभावकों एवं सेवादाताओं को भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह पुस्तक उन अभिभावकों एवं संरक्षकों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी, जो बौद्धिक दिव्यांग बच्चों को दैनिक एवं व्यावहारिक जीवन के क्रियाकलापों में आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं।

पुस्तक में दैनिक जीवन में उपयोगी क्रियाकलापों, आसपास के परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं की पहचान व उपयोग, परिवार व अन्य संबंधियों की पहचान, विभिन्न प्रकार की भावनाएँ प्रदर्शित करना आदि विषयों को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। पुस्तकों की भाषा अत्यन्त सरल है तथा बच्चों के बौद्धिक स्तर तथा उनकी क्षमता के अनुरूप विकसित की गयी है। पुस्तक में निहित सामग्री के संप्रेषण विधि अत्यन्त साधारण व सरल है। पुस्तक के विकास में उन कौशलों एवं दक्षताओं को ध्यान में रखा गया है जो कक्षा–5 लिए अपेक्षित हैं।

इस पाठ्यसामग्री को विकसित करने में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, के विशेषज्ञों, निदेशक,राज्य हिन्दी संस्थान, उ0प्र0, वाराणसी के शोध प्रवक्ताओं, बेसिक शिक्षा विभाग के शिक्षकों तथा विशेष रूप से बौद्धिक दिव्यांग बच्चों हेतु स्थापित संस्थानों में कार्य करने वाले शिक्षकों को साधुवाद देता हूँ।

हमें यह विश्वास है कि यह पाठ्यपुस्तक बौद्धिक रूप से दिव्यांग बच्चों में अपेक्षित जीवन कौशल के साथ–साथ अपेक्षित भाषायी दक्षता के विकास में भी सहायक होगी।

अप्रैल 2020

डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह
षिक्षा निदेषक (बेसिक)
एवं
अध्यक्ष, उ0प्र0 बेसिक षिक्षा परिसद्

पाठ्यक्रम

सुनना	विषयवस्तु में निहित तथ्यों, विचारों, भावों, घटनाओं एवं राष्ट्रगान को सुनकर समझना। हिन्दी वर्णमाला की ध्वनियों सुनकर समझना।
बोलना	गीत, कविता, कहानी को सुनकर समझकर बोलना। प्रसंगों एवं रोचक संस्मरणों को बोलना। सामान्य बातों के लिए अभिव्यक्ति देना। अपने आस–पास की वस्तुओं, दृश्यों घटनाओं एवं सामाजिक समस्याओं को सुनकर अभिव्यक्ति देना। शिष्टाचार संबंधी शब्दों का प्रयोग करते हुए मानक भाषा में विचार व्यक्त करना। राष्ट्रीय पर्वों के बारे में बताना।
पढ़ना	सरल वाक्यों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना। भाषा की ध्वनियों में अंतर कर वाक्यों को पढ़ना। यातायात के नियम बताना। कहानी / कविताओं को चित्रों एवं अपने अनुभव से जोड़कर पढ़ना।
लिखना	छोटे–छोटे सरल वाक्य लिखना।

शिक्षण संबंधी परिणाम

बच्चे–

- कविता/कहानी को समझकर हाव–भाव से सुनाते हैं एवं सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
- चित्रों को देखकर अपने विचार व्यक्त करते हैं।
- पर्यावरण एवं व्यक्तिगत स्वच्छता पर अपने विचार व्यक्त करते हैं।
- त्योहार, मेला पर अपने विचार व्यक्त करते हैं।
- अपने दैनिक जीवन में बातचीत के दौरान सामान्य शिष्टाचार युक्त
- शब्दों जैसे–स्वागत, कृपया, क्षमा, धन्यवाद का प्रयोग करते हैं।
- बढ़ई, पुलिस, डॉक्टर, किसान, नाई आदि के कार्यों को अपने शब्दों में बताते हैं।
- यातायात के नियमों पर बातचीत करते हैं।
- शब्द पहेली, शब्दों का खेल आदि को समझकर करते हैं।
- छोट–छोटे सरल वाक्यों को पढ़ एवं लिख लेते हैं।
- विभिन्न आकृतियों में रंग भरते हैं।
- अपने देश, राष्ट्रीय पर्व एवं राष्ट्रगान के प्रति समझ एवं सम्मान का भाव रखते हैं।

विषय सूची

पाठ सं0	पाठ का नाम		पृष्ठ सं0
	प्रार्थना		8
1	मुझसे मिलिए		9
	मेला		10
	रंग भरो		11
2	दैनिक क्रिया (कंघी करना)		12
3	आओ पढ़ें		13–14
	बारह खड़ी		15–16
4	हमारा व्यवहार		17–23
	स्वागत		17–18
	कृपया		19
	क्षमा		20–21
	धन्यवाद		22–23
5	अच्छा बच्चा	कविता	24
6	पढ़ो और लिखो –1		25–27
7	शरीर के अंग		28
8	हमारे सहयोगी		29–30
9	हेल्पलाइन		31–32
10	पढ़ो और लिखो –2		33–34
11	बलवान कौन	चित्रकथा	35–36
12	मोर	कविता	37–38
	रंग भरो		38
13	यातायात के नियम		39–41
	संकेत		40

	रंग भरो		41
14	समझदारी		42—43
15	पढ़ो और लिखो –3		44—49
	इन्हें भी जानें		47
	लिंग पहचान		48
	अभ्यास कार्य		49
16	स्कूल चलो		50—52
17	नन्हीं चिड़िया		53—56
	शब्दों का खेल		54
	शब्द सीढ़ी		55
	अभ्यास कार्य		56
18	पढ़ो और लिखो–4		57—61
	मिलान करो		61
19	बंदर और गिलहरी		62
20	प्यारा भारत		63
21	हमारे राष्ट्रीय प्रतीक		64
22	वृक्ष लगाएँ		65
	बादल		66

प्रार्थना

सूरज की किरणें सिखलातीं,
भोर हुई जग जाना है;
चिड़ियों का संगीत सिखाता,
मीठी धुन मे गाना है;
मस्त हवा के झोंके कहते,
मधुर सुगंध फैलाना है;
खिले फूल डाली पर कहते,
सारा जग महकाना है।

शिक्षण संकेत बच्चों से कविता का हाव–भाव के साथ सस्वर वाचन कराएँ तथा प्रात:कालीन प्राकृतिक सौन्दर्य पर चर्चा करें।

पाठ 1

मुझसे मिलिए

छात्र / छात्रा
की
फोटो चिपकाएँ।

मेरा नाम .... है।

मेरी माता का नाम .... है।

मेरे पिता का नाम .... है।

मैं कक्षा पाँच में पढ़ता/पढ़ती हूँ।

मेरे ग्राम/शहर का नाम ....

मेरा मोबाइल नं0 ....

मेरे जिले का नाम ....

मेरे प्रदेश का नाम ....

शिक्षण संकेत

बच्चों से संबंधित जानकरी रिक्त स्थान में भरवाएँ तथा वाक्यों को बार–बार बोलें और बच्चों से बुलवाएँ।

मेला

शिक्षण संकेत

बच्चों से चित्र पर बातचीत करें तथा मेले में जाने के उनके अनुभवों के बारे में बात करें।

रंग भरो

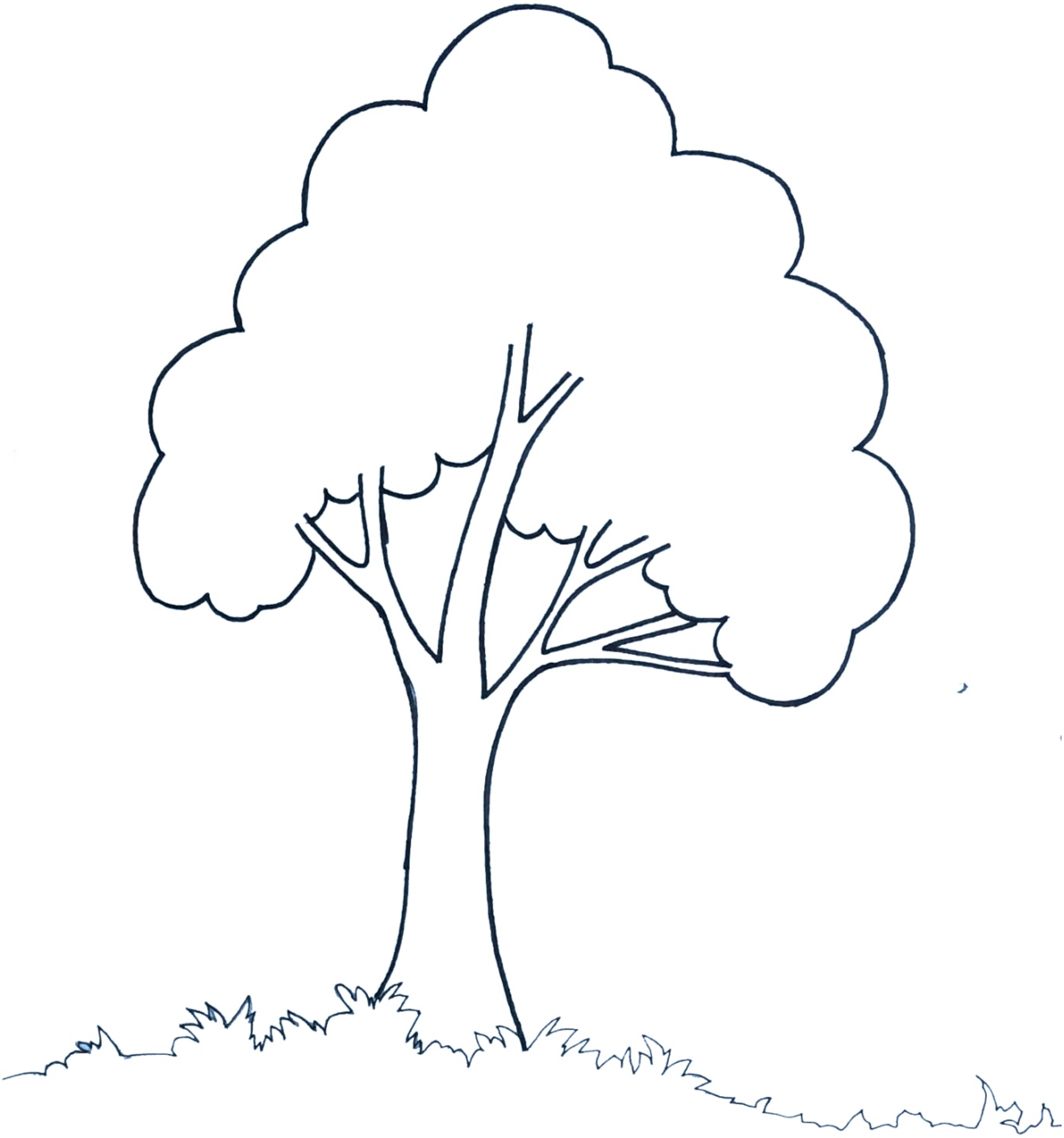

शिक्षण संकेत

बच्चों से दिये गये चित्र में रंग भरवाएँ।

पाठ 2

दैनिक क्रिया

कंघी करना

शिक्षण संकेत चित्र के आधार पर बच्चों से बातचीत करें।

पाठ 3

आओ पढ़ें

अब घर चल।

बस पर चढ़।

नल पर जल भर।

खत पढ़ कर रख।

भगत भजन कर।

सड़क पर मत चल।

अमर समझ कर पढ़।

रतन कलश रख।

शिक्षण संकेत

बार–बार वाक्यों का शुद्ध उच्चारण के साथ वाचन करें और करवाएँ।

बारह खड़ी

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः
ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः

ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः
र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः

शिक्षण संकेत

बच्चों से बारहखड़ी की सहायता से शब्द बनाने के अभ्यास कराएँ। बच्चों के नाम बारहखड़ी से बनवाएँ।

पाठ 4

स्वागत

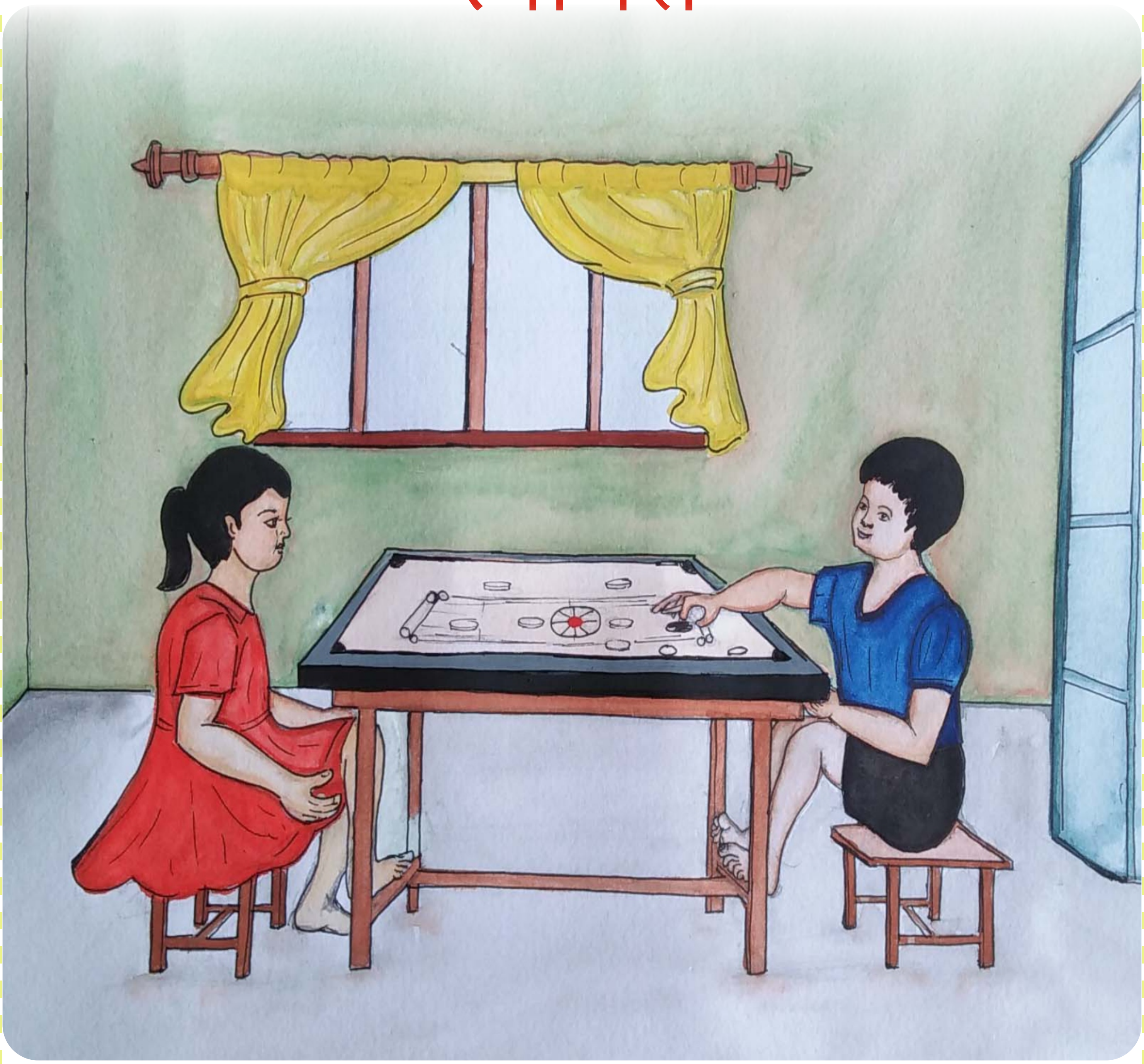

राधा और सूरज अपने घर में कैरम खेल रहे थे। तभी घंटी बजने की आवाज आई।

सूरज ने दरवाजा खोला तो देखा बुआ और फूफा जी थे। सूरज ने बुआ और फूफा जी से कहा, ''आइए, आपका स्वागत है।''

कृपया

राजन और अमन एक ही विद्यालय में पढ़ते हैं।

राजन साइकिल से स्कूल जा रहा था। अमन बोला–
"**कृपया,** मुझे भी अपनी साइकिल पर स्कूल ले चलिए।"

{kek

सरला और सुनीता बगीचे में खेल रही थीं।

वहाँ और भी छोटे–छोटे बच्चे खेल रहे थे। सरला की गेंद एक बच्चे को लग गई।

सरला ने उस बच्चे से **क्षमा** माँगी।

धन्यवाद

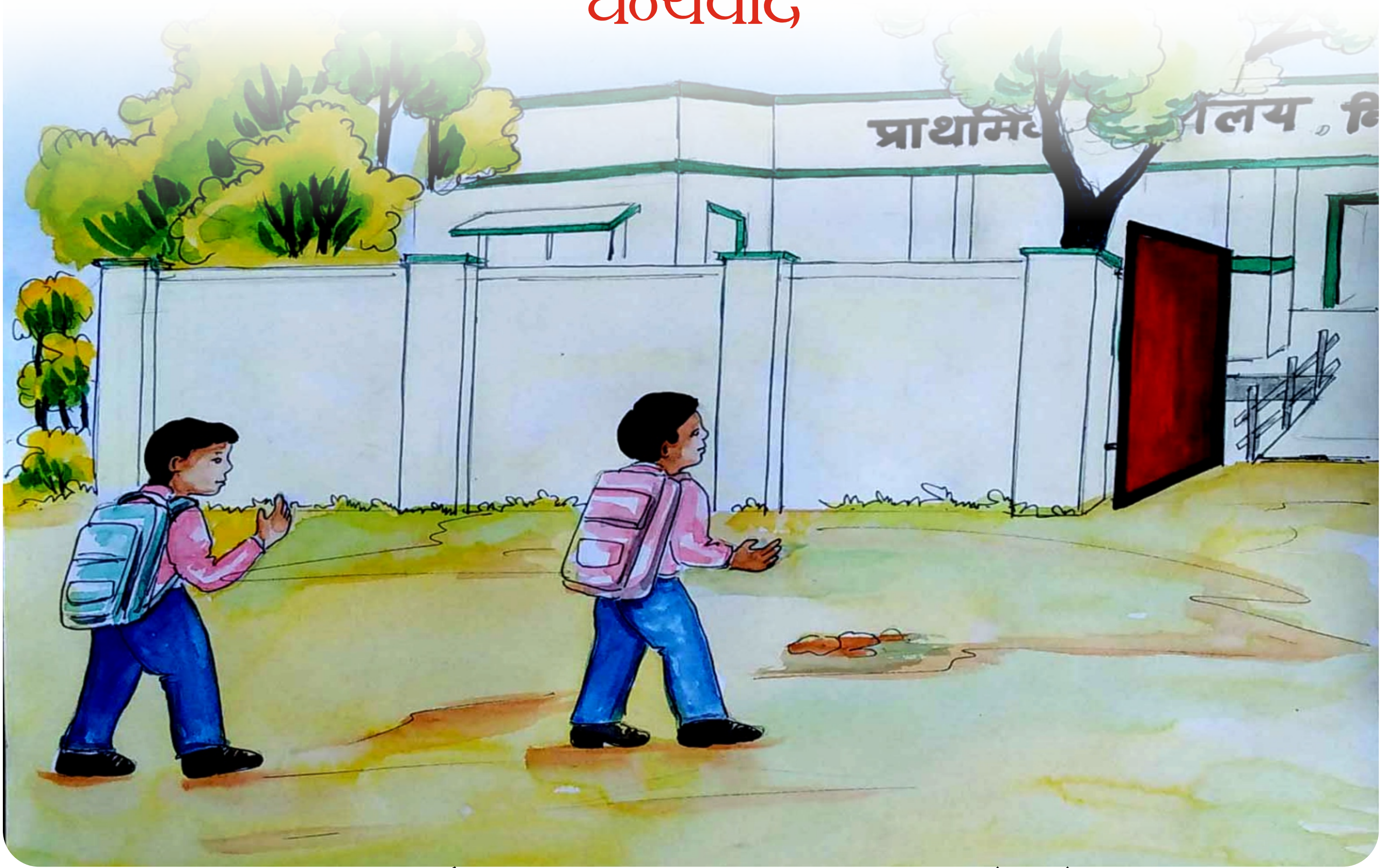

नमन और अरमान स्कूल जा रहे थे।

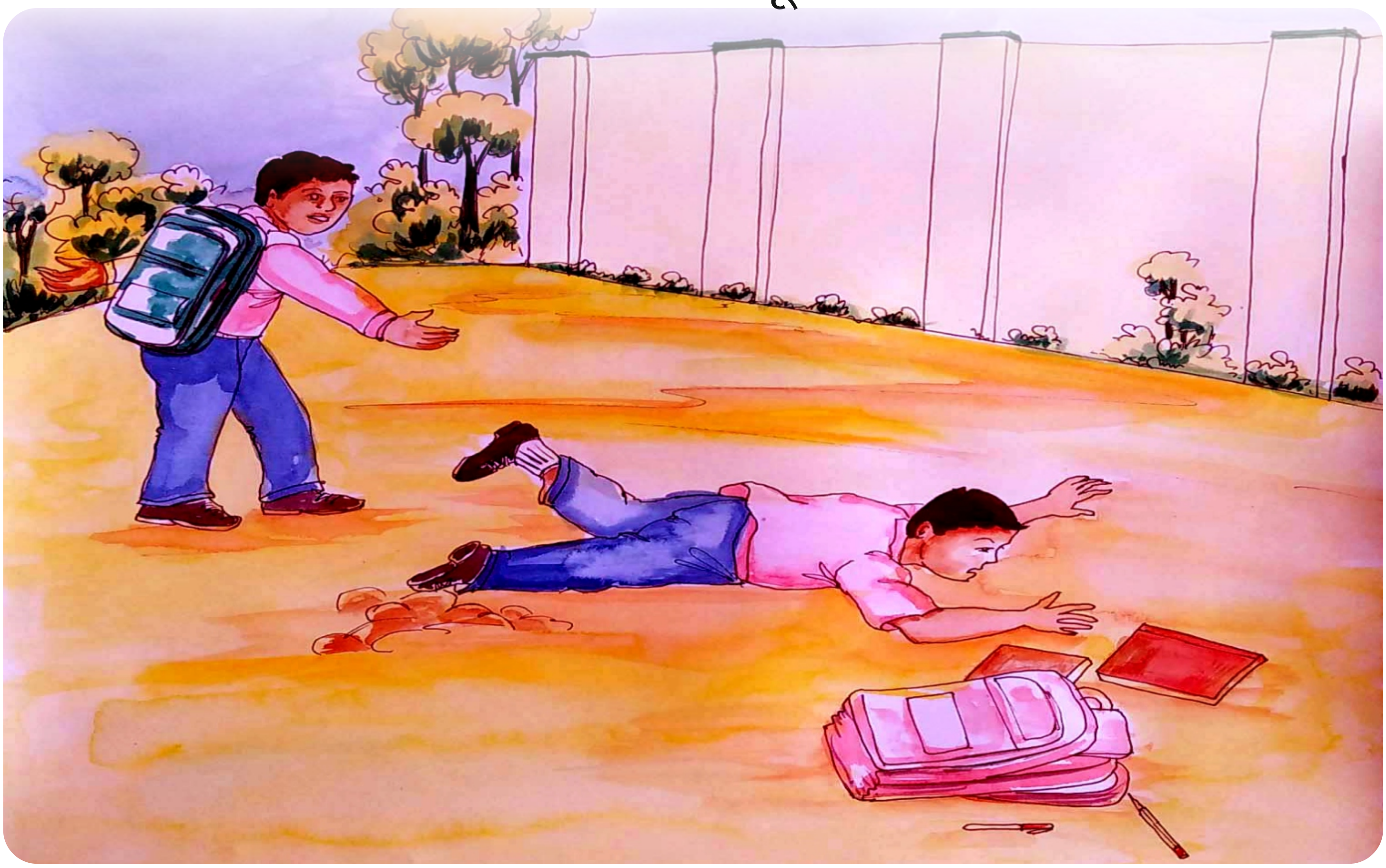

नमन को ठोकर लग गई और वह गिर पड़ा। उसका सामान बिखर गया।

अरमान ने नमन को तुरंत उठाया और उसके बिखरे सामान को समेटकर उसे दे दिया। नमन ने अरमान से मुस्कराते हुए कहा, ''**धन्यवाद** अरमान।'' फिर दोनों स्कूल चल दिए।

शिक्षण संकेत

- बच्चों से स्वागत, कृपया, क्षमा, और धन्यवाद आदि शिष्टाचार वाले शब्दों का व्यवहार में प्रयोग करवाएँ और बच्चों को स्नेहपूर्ण शब्द, आदरसूचक संबोधन तथा स्वागत–सूचक शब्दों की जानकारी दें।

पाठ 5

अच्छा बच्चा

समय से जगना, समय से सोना,
समय से हर–एक काम करो,
मिलकर रहना कभी न लड़ना,
नहीं कभी अपमान करो,
करो नमस्ते हँसते–हँसते,
खुश होकर आभार करो,
अच्छे बच्चे बनना है तो,
छोटों को भी प्यार करो।।

शिक्षण संकेत

बच्चों को सयम से कार्य करने के लाभ तथा मिलजुल कर रहने और बड़ों का सम्मान तथा छोटों के प्रति स्नेह के महत्व को बताएँ।

पाठ 6

पढ़ो और लिखो – 1

राधा माता का आदर कर।

बाजार जाकर टमाटर ला।

शिक्षण संकेत

'आ' की मात्रा के अन्य वाक्यों का भी अभ्यास कराएँ।

बिटिया पुस्तक पढ़।

रविवार का दिन निकट आ गया।

शिक्षण संकेत

'इ' की मात्रा के अन्य वाक्यों का भी अभ्यास कराएँ।

शीला नमकीन लाई।

सीमा बकरी पालती थी।

शिक्षण संकेत

'ई' की मात्रा के अन्य वाक्यों का भी अभ्यास कराएँ।

पाठ 7

शरीर के अंग

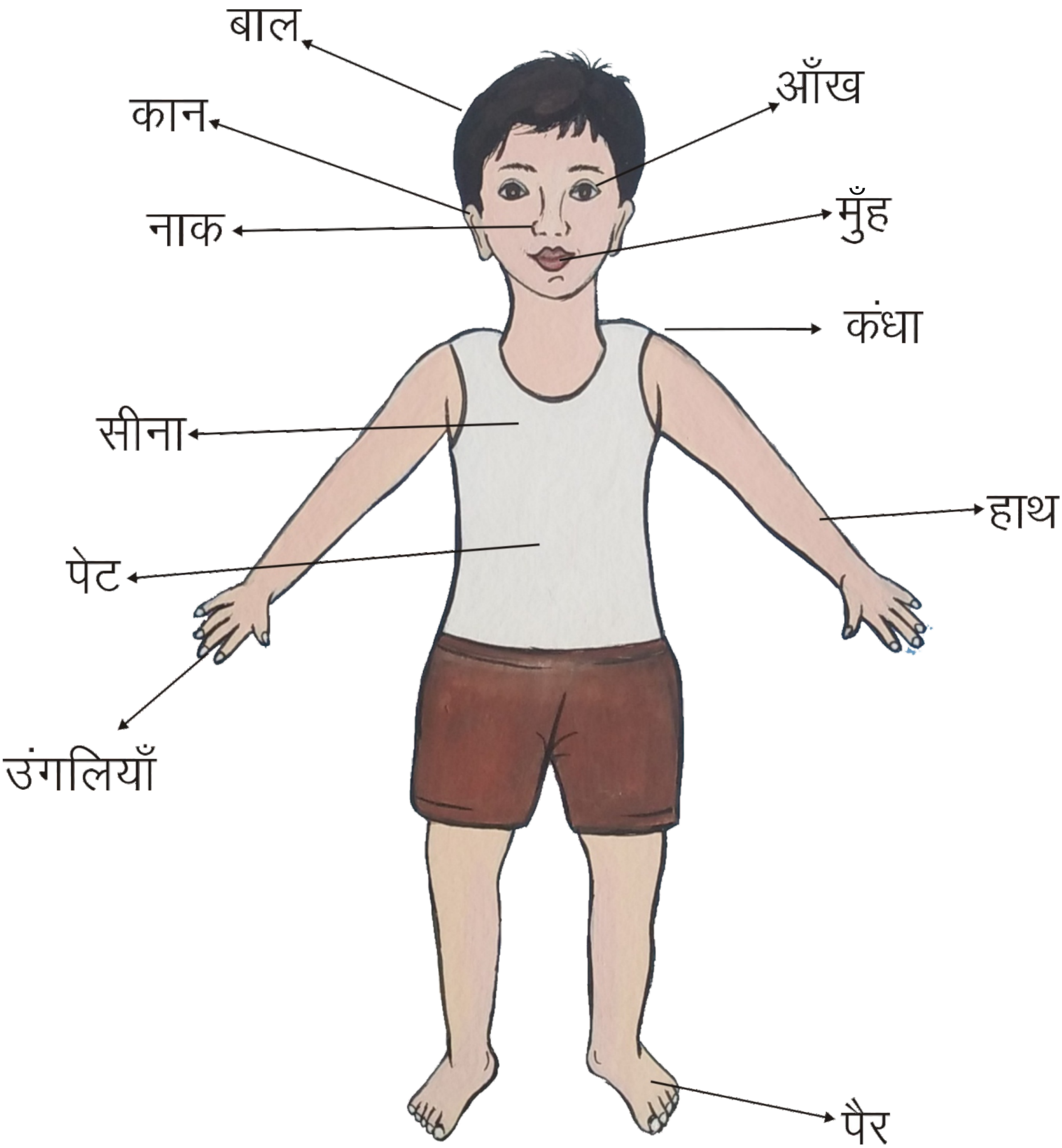

शिक्षण संकेत

बच्चों को शरीर के अंगो के नाम से परिचित कराएँ तथा उन्हें बोलने का अभ्यास कराएँ।

पाठ 8

हमारे सहयोगी

बढ़ई लकड़ी का सामान बना रहा है।

पुलिस कानून की रक्षा करती है।

डॉक्टर रोगियों का उपचार करते हैं।

दर्जी कपड़ा सिल रहा है।

किसान खेत जोत रहा है।

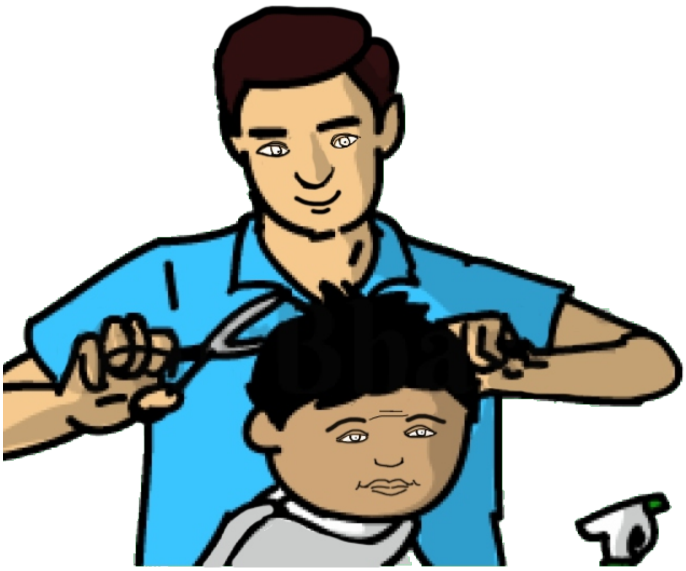

नाई बाल काट रहा है।

शिक्षण संकेत ये कौन हैं? इनका हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? आदि के बारे बच्चों से चर्चा करें।

पाठ 9

हेल्पलाइन

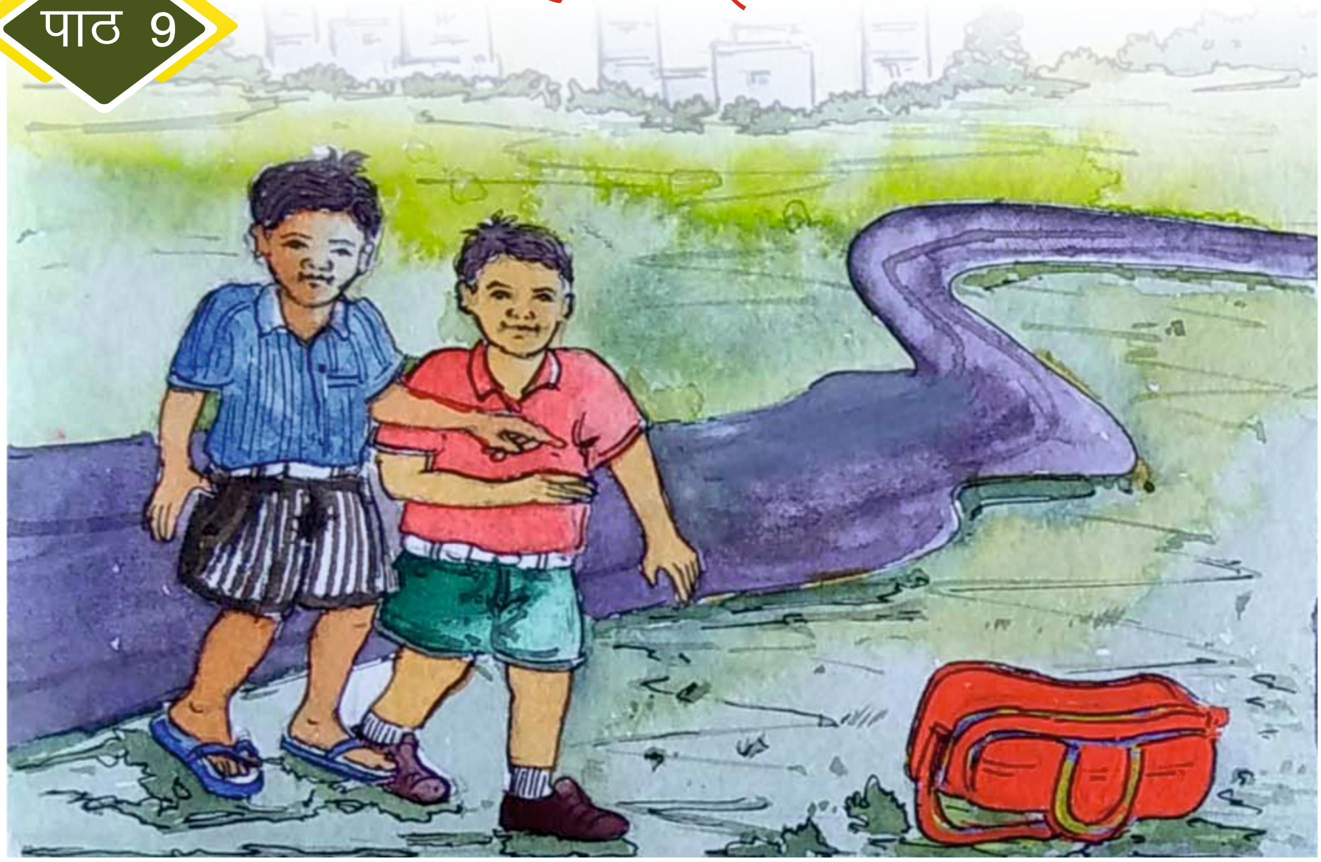

दो बच्चें जा रहे थे। सड़क के किनारे उन्हें एक बैग पड़ा मिला।

बच्चों ने एक आदमी से मदद माँगी और उससे 112 नम्बर पर फोन करने को कहा।

फोन करने पर पुलिस की गाड़ी आई और बैग की छानबीन की।

पुलिस ने दोनों बच्चों की सूझबूझ के लिए उनकी प्रशंसा की।

शिक्षण संकेत

बच्चों को पुलिस, अग्निशमन तथा चाइल्ड हेल्पलाइन के नम्बरों से परिचित कराएँ। और उन्हें यह भी बताएँ कि इन नम्बरों का प्रयोग किन परिस्थितियों में किया जाता है।

पढ़ो और लिखो–2

सुमन गुलाब जामुन ला।

कुसुम सुबह साबुन लाई।

शिक्षण संकेत

'उ' की मात्रा के अन्य वाक्यों का भी अभ्यास कराएँ।

पूजा तराजू में आलू रख।

सूरज पूरब से निकलता है।

शिक्षण संकेत

'ऊ' की मात्रा के अन्य वाक्यों का भी अभ्यास कराएँ।

पाठ 11

बलवान कौन

हवा और सूरज में बहस हुई– ''दोनों में बलवान कौन है?'' दोनों में शर्त लगी कि जो आदमी की ओढ़ी हुई चादर उतरवा देगा वही बलवान होगा।

हवा ज़ोर से चलने लगी। आदमी ने अपनी चादर को और कस लिया।

अब सूरज की बारी थी। वह बहुत तेज से चमकने लगा। गर्मी से घबराकर उस आदमी ने चादर उतार दी।

उसके चादर उतारते ही सूरज हँसकर बोला ''मैं जीत गया।'' हवा ने हार मान ली।

शिक्षण संकेत चित्रों पर बातचीत करें तथा चित्रों की सहायता से बच्चों को कहानी सुनाएँ।

पाठ 12

मोर

सुन्दर अपने पंख खोलकर,
नाच रहा जंगल में मोर;
नाच दिखाता घूम–घूम कर,
ऊपर बादल करते शोर।

शिक्षण संकेत

कविता का सस्वर वाचन करें एवं बच्चों से कराएँ।

रंग भरो

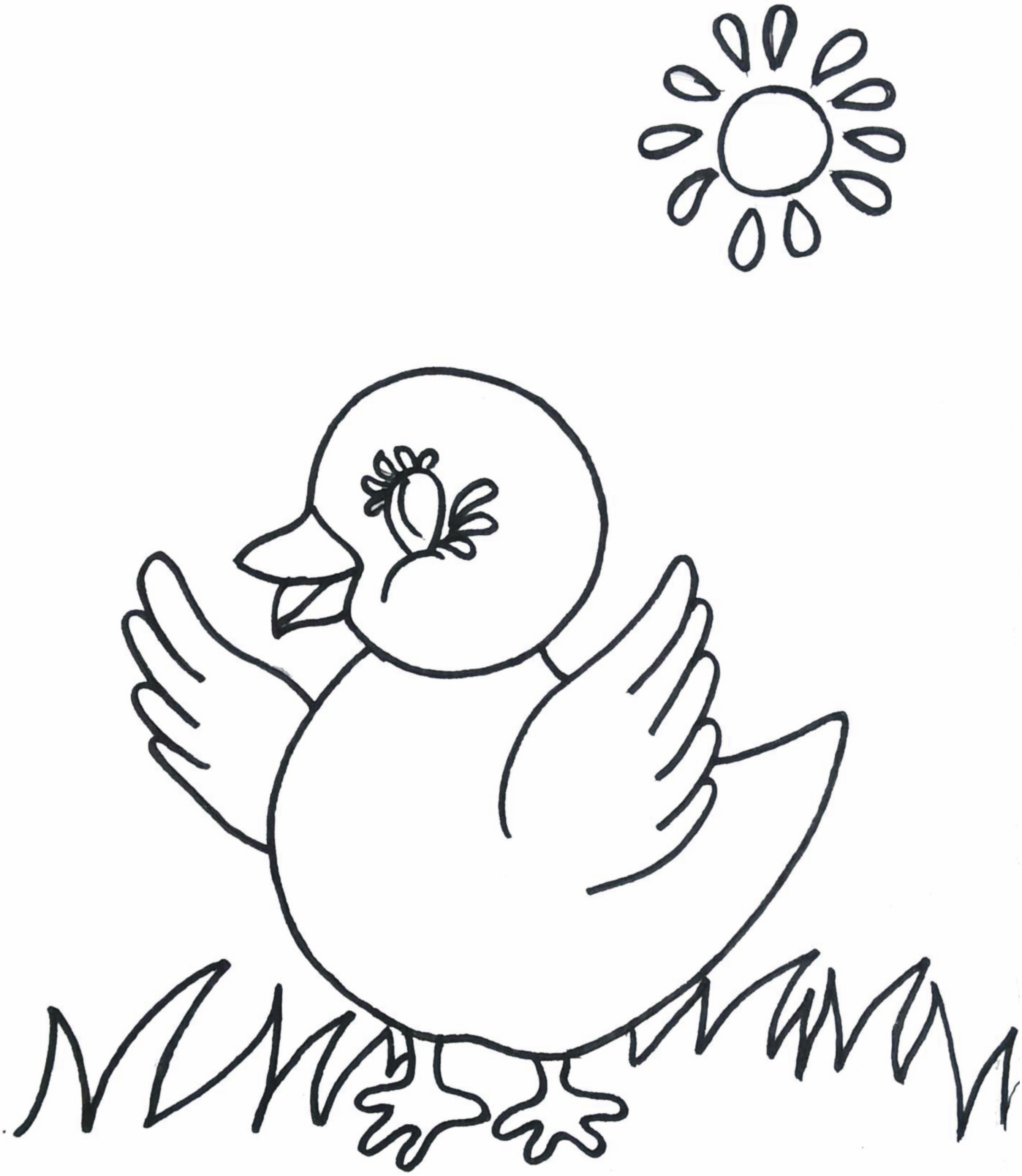

शिक्षण संकेत बच्चों से चित्रों में रंग भरवाएँ।

पाठ 13

यातायात के नियम

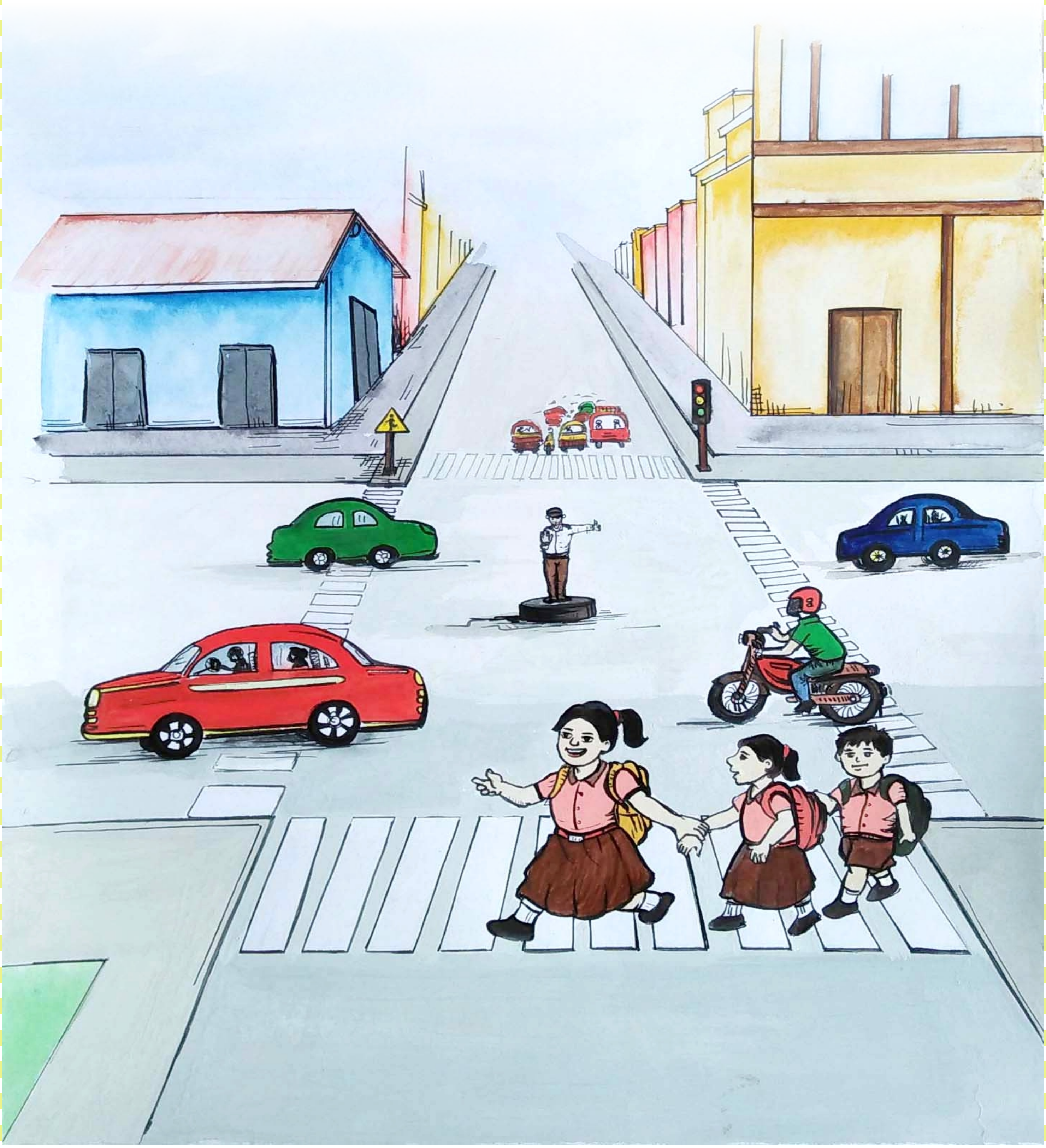

शिक्षण संकेत

बच्चों को जेब्रा क्रॉसिंग, ट्रैफिक लाइट, सिग्नल, हेलमेट तथा फुटपाथ की उपयोगिता तथा इनके प्रयोग के बारें में बताएँ।

संकेत

लाल बत्ती जले तो रुक जाओ,
चलते–चलते थम जाओ;
पीली कहती सुन मेरे यार,
चलने को अब हो तैयार;
हरी कहे अब चलते जाओ,
आगे–आगे बढ़ते जाओ।

शिक्षण संकेत बच्चों को यातायात संकेतों (ट्रैफिक सिग्नल) के बारे में बताएँ।

रंग भरो

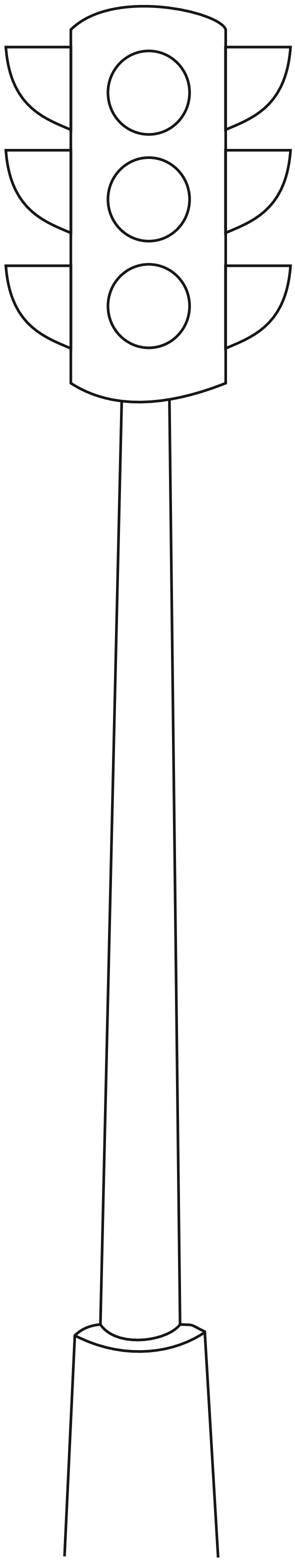

शिक्षण संकेत

ट्रैफिक लाइट में रंग भरने में बच्चों की मदद करें।

समझदारी

एक टोपी वाला रंग–बिरंगी टोपियाँ बेच रहा था। तेज धूप के कारण वह एक पेड़ के नीचे टोपियाँ रखकर सो गया।

पेड़ पर कुछ बन्दर थे। वे उसकी टोपियाँ लेकर पेड़ पर चढ़ गएँ।

नींद खुलने पर टोपी वाले ने बंदरों को टोपियाँ पहने देखा।

कुछ सोचकर टोपी वाले ने अपनी पहनी टोपी उतार कर ज़मीन पर फेंक दी। सभी बंदरो ने भी अपनी टोपियाँ उतारकर फेंक दी। टोपी वाला टोपियाँ लेकर चला गया।

शिक्षण संकेत बच्चों को चित्र दिखाकर बातचीत करें तथा चित्रों से बनी कहानी को सुनाकर अभिनय कराएँ।

पाठ 15

पढ़ो और लिखो – 3

कृषक कृषि करता है।

मृग वृक्ष के नीचे खड़ा है।

शिक्षण संकेत

'ऋ' की मात्रा से बने अन्य वाक्यों का भी अभ्यास कराएँ।

उसने तेरह रूपये जेब में रखे।

महेश के घर मेहमान आए।

शिक्षण संकेत

'ए' की मात्रा से बने अन्य वाक्यों का भी अभ्यास कराएँ।

कैलाश और हैदर पैदल गए।

शैली और वैभव नैनीताल गए।

शिक्षण संकेत 'ऐ' की मात्रा से बने अन्य वाक्यों का भी अभ्यास कराएँ।

इसे भी जानें

- माता जी चाय पी रही हैं।

- पिता जी बाजार जा रहे हैं।

- भाई फुटबॉल खेल रहा है।

- बहन साइकिल चला रही है।

- दादा जी अखबार पढ़ रहे हैं।

- दादी जी कहानी सुना रही हैं।

शिक्षण संकेत स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग शब्दों से वाक्यों में होने वाले परिवर्तन का अभ्यास कराएँ।

लिंग पहचानें

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
लड़का	लड़की
दादा	दादी
चाचा	चाची
भाई	बहन
पिता	माता
बेटा	बेटी

शिक्षण संकेत

बच्चों को पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग शब्दों के वाचन का अभ्यास कराएँ। इसके अतिरिक्त अन्य शब्दों जैसे– घोड़ा–घोड़ी, बकरा–बकरी, राजा–रानी, नाना–नानी आदि का भी अभ्यास कराएँ।

अभ्यास कार्य

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

1. नानी जी कपड़ा सिल________ हैं।
(रही / रहा)

2. सुधा खाना खा________ है।
(रही / रहा)

3. रोहित फुटबॉल खेल________ है।
(रही / रहा)

4. दीदी कंघी कर________ है।
(रही / रहा)

5. राधा गाना गा________ है।
(रही / रहा)

पाठ 16

स्कूल चलो

राजन और रामू दोस्त थे। दोनों एक साथ रहते थे। राजन विद्यालय न जाकर अपने पिता के काम में हाथ बँटाता था और रामू विद्यालय जाता था।

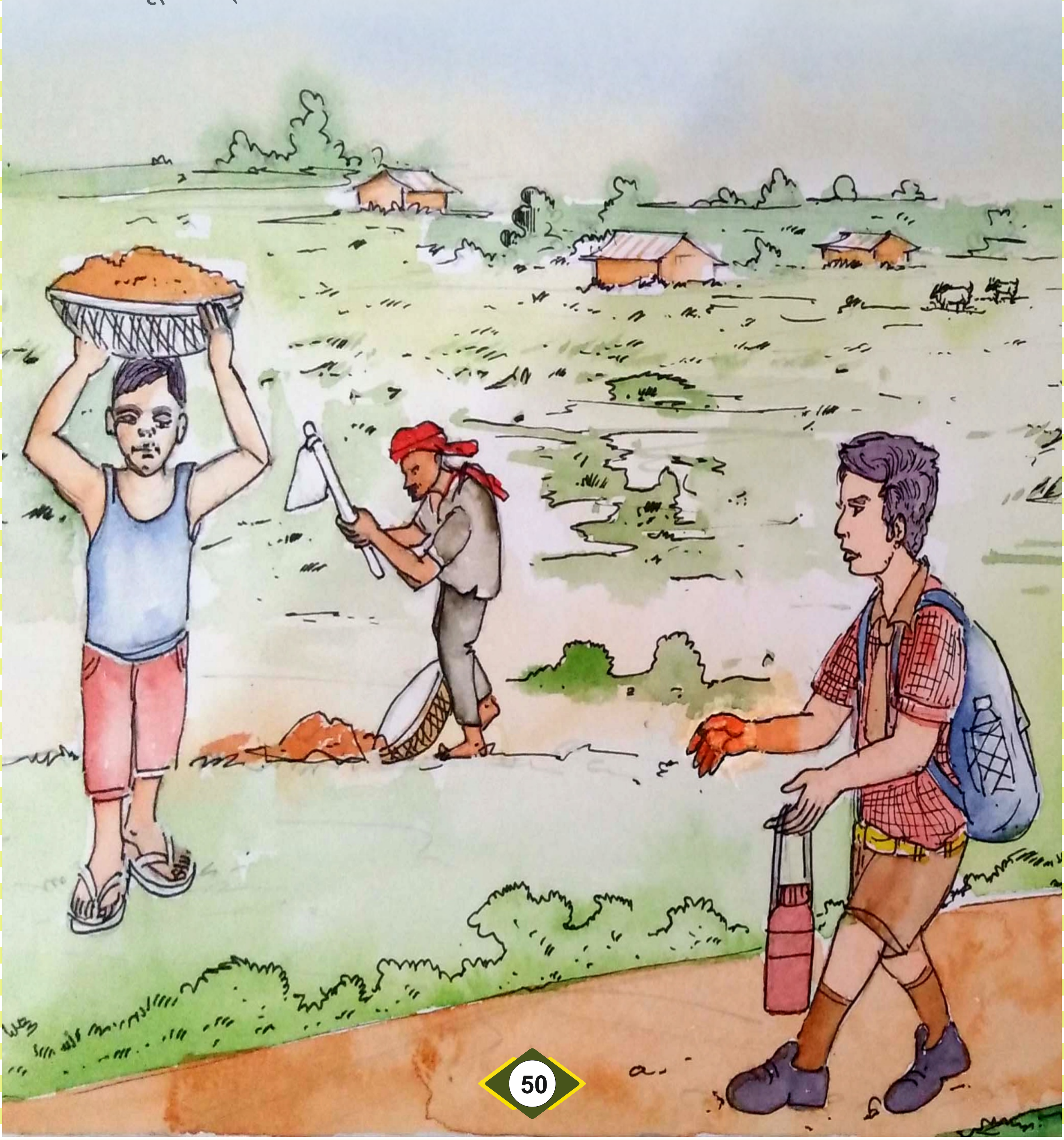

रामू अपने शिक्षक से राजन को विद्यालय आने के लिए प्रेरित करने को कहता है।

शिक्षक रामू के साथ राजन के माता–पिता से मिलने गए और उन्होनें राजन को विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित किये।

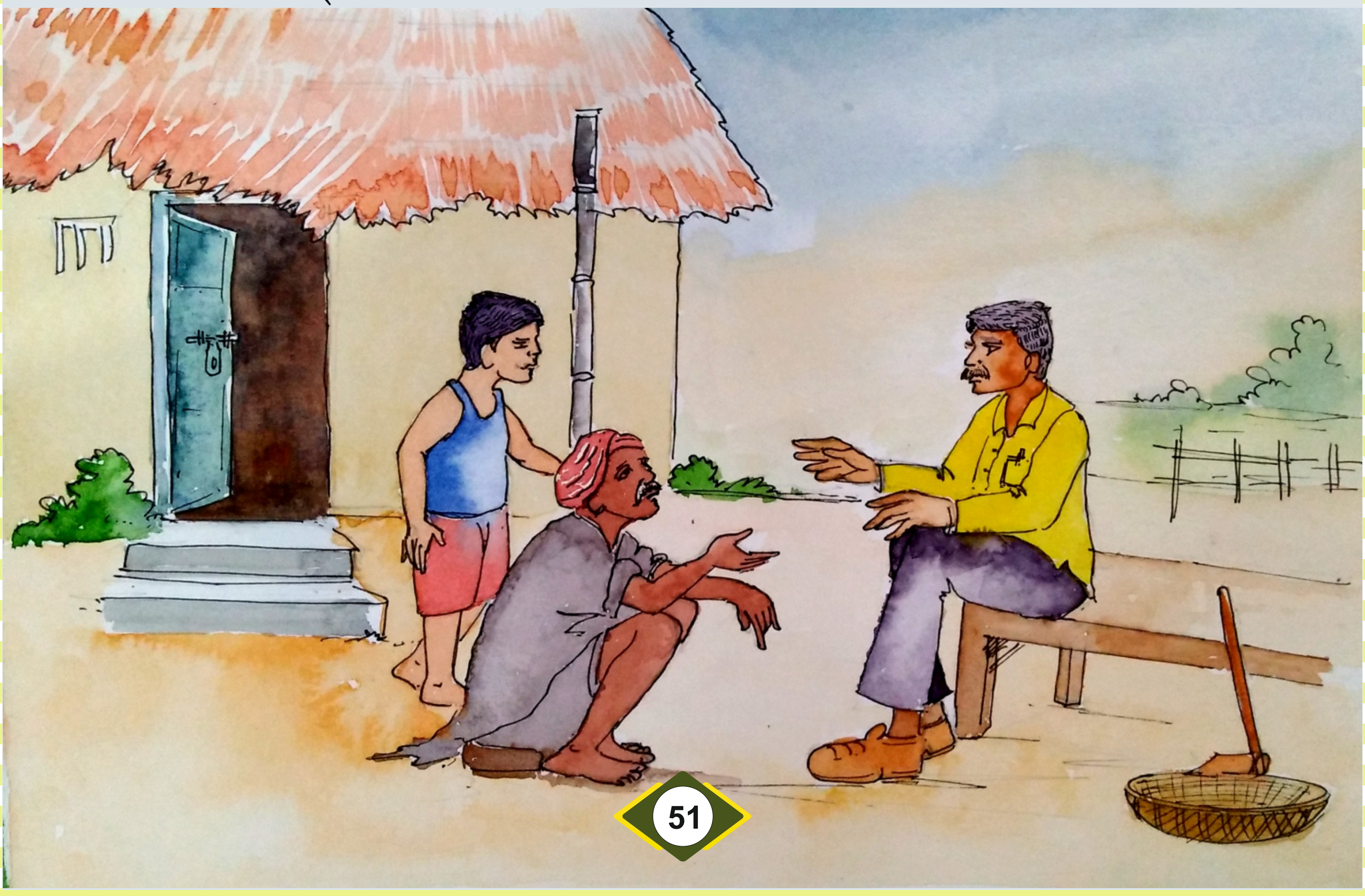

शिक्षक के समझाने पर राजन भी रामू के साथ स्कूल जाने लगा और पढ़ाई करने लगा। स्कूल में रामू और राजन पढ़ाई के साथ–साथ अन्य बच्चों के साथ खेलते भी थे।

शिक्षण संकेत

कहानी के माध्यम से बच्चों को शिक्षा के महत्त्व के बारे में बताया जाय। बच्चों को रोज विद्यालय आने के लिए प्रेरित किया।

नन्हीं चिड़िया

नन्हीं सी इक प्यारी चिड़िया,
जब ऊपर उड़कर जाती;
हम जैसे नन्हें मुन्नों को,
ऊँचे उठना सिखलाती।

नन्हीं सी इक प्यारी चिड़िया,
जब दाना चुगकर आती;
मेहनत से ही भोजन मिलता,
बात हमें यह सिखलाती।

नन्हीं सी इक प्यारी चिड़िया,
जब घर–आँगन में आती;
फुदक–फुदक कर हम सबको,
हँसते रहना सिखलाती।

शिक्षण संकेत बच्चों से कविता का सस्वर वाचन कराएँ और उन्हें परिश्रम करने के लिए प्रेरित करें।

शब्दों का खेल

गुब्बारे में से अक्षर चुनकर शब्दों को पूरा करें–

v	d	c	i	“k

	द	र	क
ज			
ग			
र			

	र	ग	द
र			
त			
न			

	ट	ह	ल
स			
र			
त			

	र	व	ल
ल			
ट			
न			

	र	ब	त
ल			
ज			
म			

शिक्षण संकेत बच्चों से उचित अक्षर चुनने को कहें तथा रिक्त स्थान भरवाने में सहायता करें।

शब्द सीढ़ी

	ला	स					
		मो					
			त				
			बू				
			ज	हा			
					ग		ला
						ट	
						र	

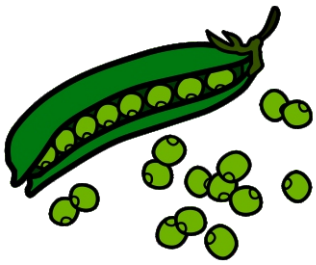

शिक्षण संकेत बच्चें से शब्दों की लड़ी पूरी कराएँ।

अभ्यास कार्य

वाक्य पूरा करो–

(अच्छा, सोमवार, विद्यालय, नहाता)

1 आज ________ है।

2 मैं प्रतिदिन ________ जाता हूँ।

3 मुझे आम खाना ________ लगता है।

4 मैं प्रतिदिन ________ हूँ।

शिक्षण संकेत दिये गये शब्दों को रिक्त स्थानों में भरवाएँ तथा वाक्य का उच्चारण कराएँ।

पाठ 18

पढ़ो और लिखो – 4

सोहन रसोई से कटोरी लाओ।

कोयल की बोली मीठी होती है।

शिक्षण संकेत 'ओ' की मात्रा से बनें अन्य वाक्यों का भी अभ्यास कराएँ।

सौरभ और कौशल नौका में बैठे।

मौसी जी पकौड़ी लाईं।

शिक्षण संकेत

'औ' की मात्रा से बनें अन्य वाक्यों का भी अभ्यास कराएँ।

अंकित पंजाब गया।

तितली के पंख रंगीन है।

शिक्षण संकेत

'अं' की मात्रा से बनें अन्य वाक्यों का भी अभ्यास

रोहन प्रातः उठो।

पुनः पाठ पढ़ो।

शिक्षण संकेत

'अः' की मात्रा से बनें अन्य वाक्यों का भी अभ्यास कराएँ।

मिलान करो

घोड़ा	कंघा
कंघा	झूला
झूला	घोड़ा
मेढक	कैंची
कैंची	मेढक

शिक्षण संकेत

समान शब्दों का मिलान कराएँ।

पाठ 19

बंदर और गिलहरी

एक बंदर पेड़ पर बैठा था। बंदर की पूँछ बहुत लंबी थी। इतनी लंबी थी कि ज़मीन तक लटक रही थी। एक गिलहरी ज़मीन पर उछल–कूद कर रही थी। अचानक उसे पूँछ दिखाई दी। उसने सोचा– यह झूला कहाँ से आ गया थोड़ी देर पहले तो नहीं था। वह पूँछ पर चढ़कर झूलने लगी। बंदर को गुदगुदी हुई। उसने नीचे देखा। वह हँसकर बोला– ''बहन गिलहरी! यह क्या कर रही हो।'' गिलहरी चौंकी– ''बंदर भैया, यह तुम हो। मैं तो तुम्हारी पूँछ को झूला समझकर झूल रही थी। बड़ा मज़ा आ रहा था।'' और गिलहरी हँसती हुई पेड़ की डाली पर चढ़ गई।

शिक्षण संकेत चित्र दिखाकर कहानी सुनाएँ और कहानी से सम्बधित छोटे-छोटे प्रश्न

प्यारा भारत

हम माँ की आँखों के तारे,
भारत माँ के बने दुलारे;
हम हैं भारत माँ की आशा,
भारत के गौरव की भाषा;
सबको मीठे गीत सुनाएँ,
खुश रहना सबको सिखलाएँ।

शिक्षण संकेत कविता का उचित लय के साथ सस्वर वाचन कराएँ।

पाठ 21

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

प्रत्येक देश की अपनी पहचान होती है। यह पहचान कुछ चिह्नों से की जाती है। ये चिह्न राष्ट्रीय प्रतीक कहलाते हैं।

राष्ट्रीय पशु (बाघ)

राज चिह्न (अशोक स्तम्भ)

राष्ट्रीय पक्षी (मोर)

राष्ट्रीय पुष्प (कमल)

शिक्षण संकेत दिये गये राष्ट्रीय प्रतीकों के बारे में बताएँ एवं अन्य प्रतीकों के बारे में भी चर्चा करें।

पाठ 22

वृक्ष लगाएँ

हम सब अपने कदम बढ़ाएँ,
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ।

हरा–भरा जीवन हो अपना,
हरियाली हो सबका सपना।

कोई पेड़ न कटने पाए,
जंगल अब न घटने पाएँ।

शिक्षण संकेत बच्चों से कविता का सस्वर वाचन कराएँ तथा पेड़ों के महत्त्व पर चर्चा करें।

बादल

काले बादल–काले बादल,
जल भर कर ले आओ ना;
फसलें मेरी सूख रही हैं,
थोड़ा जल बरसाओ ना।

शिक्षण संकेत

कविता का सस्वर वाचन कराएँ। बच्चों से जल के स्रोत एवं संचयन पर चर्चा करें।
बारिश होने से पूर्व प्रकृति में क्या–क्या परिवर्तन होता है? इस बात पर चर्चा करें।

आओ सीखें

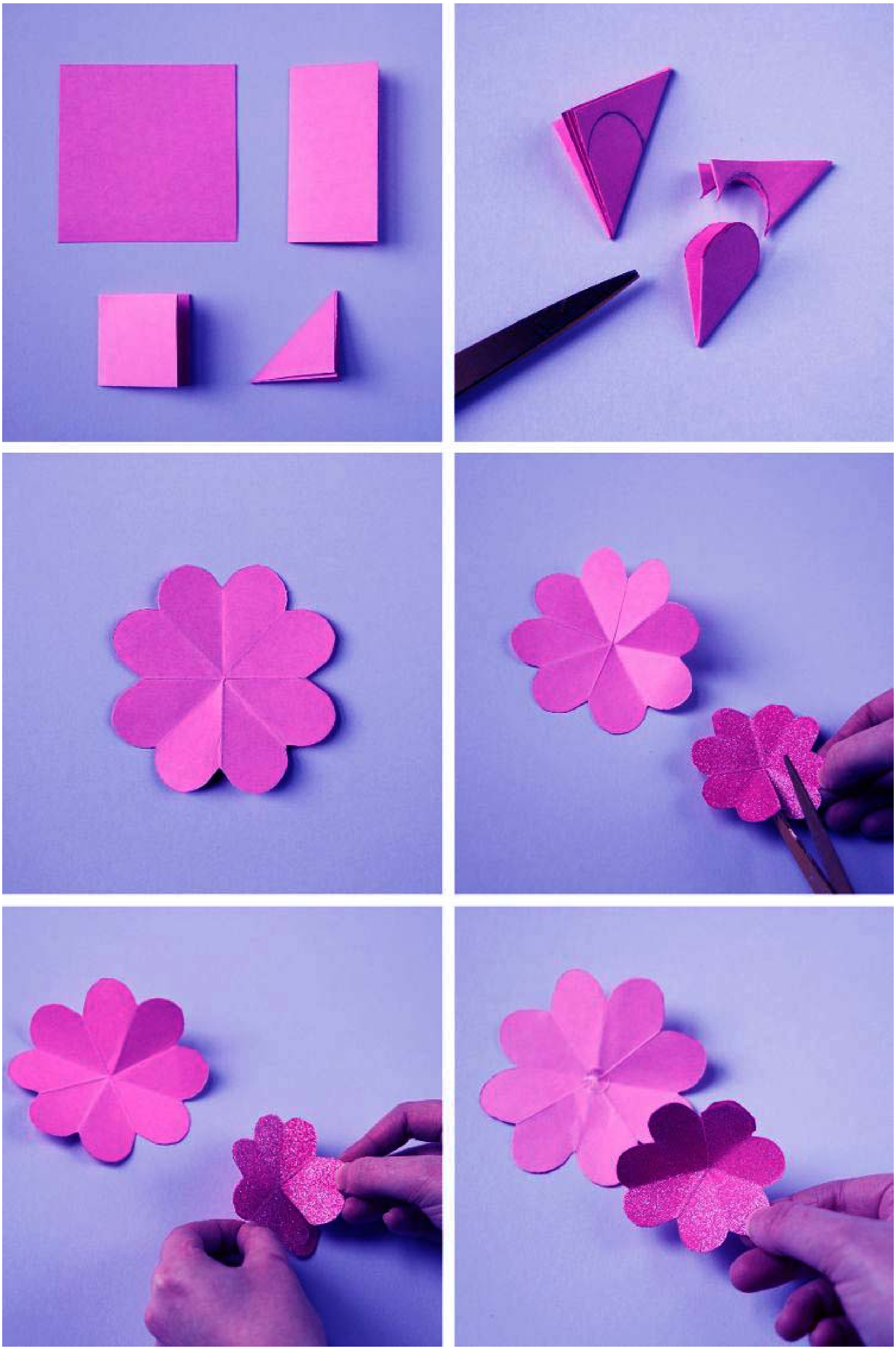

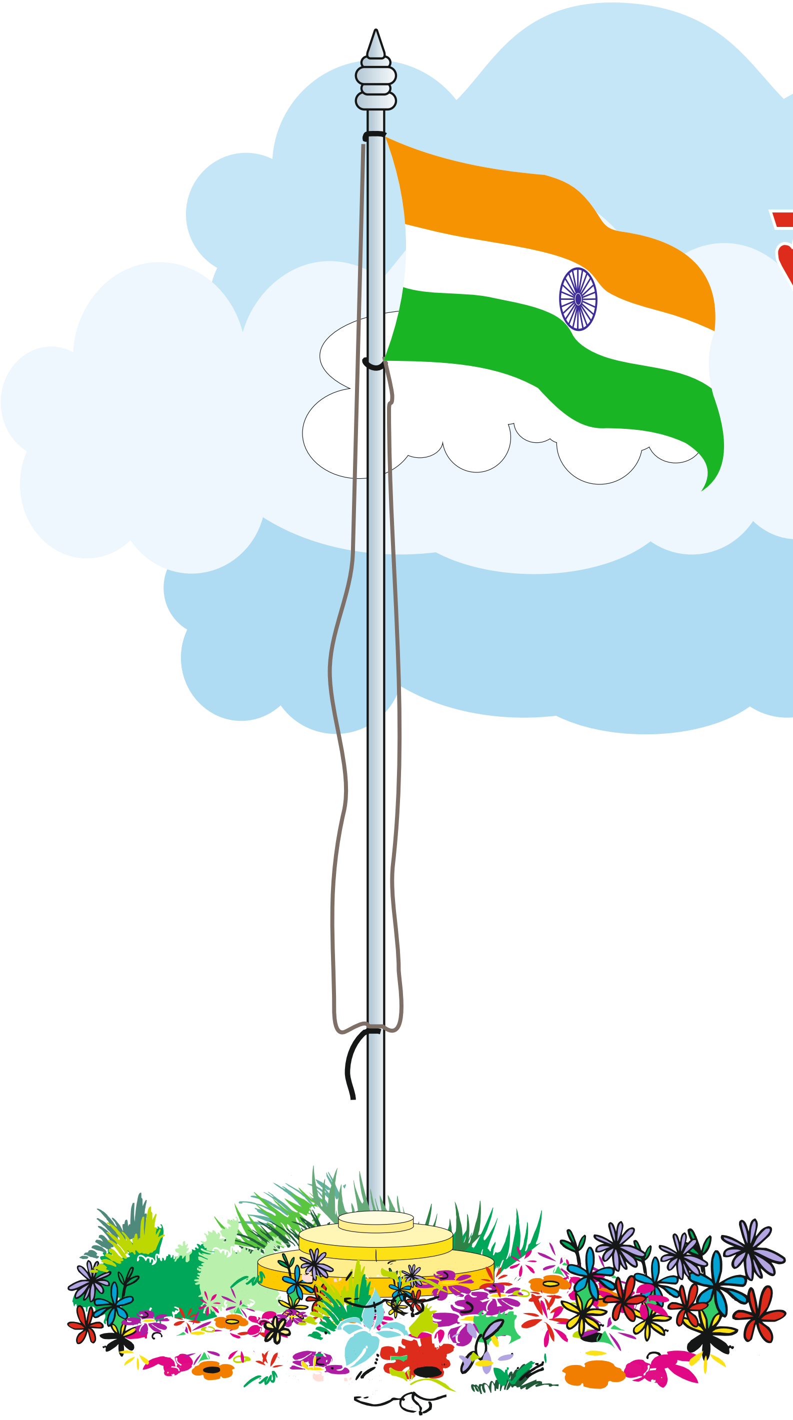

राष्ट्रगान

जन–गण–मन अधिनायक, जय हे
भारत–भाग्य विधाता।
पंजाब–सिंध–गुजरात–मराठा–
द्राविड़–उत्कल बंग
विंध्य–हिमाचल–यमुना–गंगा
उच्छल–जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा
जन–गण–मंगल दायक जय हे
भारत–भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे!

सत्र 2020-2021

आवरण पृष्ठ की विशिष्टियाँ–

आवरण पृष्ठ के कागज का विशिष्टिकरण : प्रयुक्त कागज वर्जिन पल्पयुक्त 175 जी0एस0एम0 का आर्ट पेपर का प्रयोग किया गया है। जिसमें कागज का बर्स्ट इण्डेक्स–न्यूनतम 0.9,वैक्स पिक्स–नो पिक्स ऑन 5ए, ग्लास परसेंट–न्यूनतम 55, ब्राइटनेस न्यूनतम 72 प्रतिशत और सरफेस पी0एच0 5.5 से 8.0 है। कागज की अन्य विशिष्टियों बी0आई0एस0 कोड आई0एस0–4658–1988 के अनुसार है, एवं कागज 53.34 सेमी0X78.74 सेमी है। आवरण पृष्ठ का बाहरी भाग चार रंगों तथा अन्दर का भाग एक रंग में मुद्रित है।

उ० प्र० बेसिक शिक्षा परिषद्

निःशुल्क वितरण हेतु